डा. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के अनमोल विचारों का संकलन

निशा किचलू
व्यैक्तिक सहायक

जब मैने डा. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम की आत्मकथा "अग्नि की उडान रामेश्वर से राष्ट्रपति भवन की कहानी" को पढ़ा तो मुझे उनके आध्यात्मिक एवं वैज्ञानिक विचार-संदेश बहुत उत्साहवर्द्धक एवं प्रेरणा-प्रेरक लगे । प्रवाहिनी के माध्यम से मैं उनके कुछ अंश प्रस्तुत कर रही हूँ।

- ईश्वर की सृष्टि में प्रत्येक कण का अपना अस्तित्व होता है । प्रत्येक को कुछ न कुछ करने के लिये परवर दिगार ने बनाया है। इसलिए भारत के कई कोटि जनों को कभी भी छोटा या असहाय महसूस नहीं करना चाहिए। हम सब अपने भीतर दैवीय शक्ति को लेकर आये हैं। हम सबके भीतर ईश्वर का तेज छिपा है। हमारी कोशिश इस तेजपुंज को पंख देने की रहनी चाहिए जिससे यह चारों ओर अच्छाइयाँ एवं प्रकाश फैला सके ।
- कुछ लोग विज्ञान को इस तरह से देखते हैं जो व्यक्ति को ईश्वर से दूर ले जाए, लेकिन मैंने देखा है कि हृदय के माध्यम से ही हमेशा विज्ञान तक पहुंचा जा सकता है। मेरे लिए विज्ञान हमेशा आध्यात्मिक रूप में समृद्ध और आत्मज्ञान का रास्ता रहा है ।
- मैं हमेशा से एक धार्मिक व्यक्ति रहा हूँ तथा मेरा मानना रहा है कि ईश्वर के साथ हर काम में मेरी सहभागिता है। मुझे मालूम था कि जितनी योग्यता मेरे पास है, अच्छा काम करने के लिए उससे और ज्यादा योग्यता होना जरूरी है। इसलिए मुझे मदद की आवश्यकता है और वह सिर्फ ईश्वर ही दे सकता है। मैंने खुद अपनी योग्यता का सही अनुमान लगाया और उसे 50 फीसदी तक बढ़ा दिया, फिर मैं अपने को ईश्वर के हाथों में सौंप देता था इस भागीदारी में मुझे वह सारी शक्ति मिली है, जिसकी मुझे जरूरत थी ओर वास्तव में मैं आज भी महसूस करता हूँ कि वह शक्ति मुझमें बह रही है। आज मैं यह पक्के तौर पर कह सकता हूँ कि इसी शक्ति के रूप में ईश्वर आपके भीतर है। इसी शक्ति से आप अपने उद्देश्यों को हासिल कर अपने सपनों को साकार कर सकते हैं।
- भारतीय संस्थानों में जो चीज सबसे ज्यादा मुश्किलें पैदा करती है, वह चारों और व्यापक रूप से लोगों में व्याप्त अवज्ञारूपी अंहकार है। इसके रहते हम अपने से छोटों, अपने अधीनस्थों की बात नहीं सुनते, अगर आप किसी को अपमानित करते हैं तो आप उससे किसी नतीजे की आशा नहीं कर सकते। अगर आप उसे तिरस्कृत करेंगे या उसकी उपेक्षा करेंगे तो आप उससे किसी सृजनात्मकता की उम्मीद नहीं कर सकते। दुर्भाग्यवश आज हमारे देश में सिर्फ 'हीरो' और 'जीरो' है, जिनके बीच एक बड़ी विकट विभाजन रेखा है। एक तरफ कुछ सौ हीरो हैं और दूसरी ओर पचानवे करोड़ लोग नीचे तरफ धकेले पड़े है । इस स्थिति को बदलना जरूरी है ।
- समस्याओं का सामना करने और उन्हें हल करने की प्रक्रिया प्रायः काफी परिश्रम वाली एवं कष्ट साध्य होती है । हममें अतंहीन दीर्घसूत्रता है । दरअसल समस्याओं को नश्तर की तरह प्रयोग कर ही असफलता के नासूर चीरे जा सकते हैं और दर्द की पीड़ा से उबरा जा सकता है । वस्तुतः समस्याएं अतंर्निहित साहस एवं बुद्धिमत्ता को प्रकट करती है ।
- अनुभव के कई विभिन्न प्रकार और स्तर हैं, जो इस आंतरिक शक्ति की क्रिया को जटिल बना देते हैं । जब कभी हम उसके साथ अपना संबंध कायम कर रहे होते हैं तो हम अपने को

अंतर्दृष्टि एवं बुद्धिमत्ता से भरा पाते हैं । यह किसी दूसरे व्यक्ति से आ सकती है , एक शब्द, एक प्रश्न और यहाँ तक कि एक दृष्टि से भी मिल जाती है । कई बार यह किसी पुस्तक के माध्यम से, बातचीत से, किसी कविता की पंक्ति से और किसी चित्र के एक हिस्से से प्राप्त कर सकते हैं । एक हल्की सी चेतावनी के बिना ही आपके जीवन में कोई भी नई शुरूआत हो सकती है और कोई फैसला हो जाता है । एक ऐसा फैसला जिसके बारे में आपको पता भी नहीं चल पाता ।

- सभी बुद्धिमान मनुष्य अपने को दुनिया के अनुरूप ढाल लेते हैं । सिर्फ कुछ ही लोग ऐसे होते हैं, जो दुनिया को अनुरूप बनाने में लगे रहते हैं । दुनिया में सारी तरक्की इन दूसरे तरह के लोगों पर निर्भर होती है जो हमेशा कुछ नया कर परिवर्तन लाने में लगे रहते हैं ।
- किसी भी अच्छी योजना को तुरन्त ही असरदार तरीके से लागू कर देना ज्यादा अच्छा है, बजाय इसके कि कोई अच्छी योजना अगले हफ्ते लागू की जाए । यह एक ऐसी कल्पना है कि बड़ी जीत के लिए हर एक को आशावादी होना चाहिए ।

"सुदंर है वे हाथ, सृजन करते जो सुख से,
धीरज से, सच से, साहस से, हर क्षण, हर पल हर दिन, हर युग
चलो सिर उठाकर, पड़े हर कदम इत्मीनान से ।
कहाँ छोड़ते हैं निशान वक्त की रेत पर,
जो पग डगमगाते लरजते, झिझकते, घिसटते"

- ज्ञान एक ऐसी वास्तविक संपत्ति है, जो आपके काम का एक सर्वाधिक महत्वपूर्ण हिस्सा होती है । जितना ज्यादा ज्ञान आपके पास होगा आप उतने ही स्वतंत्र रहेंगे । ज्ञान को किसी के पास से ले जाया नहीं जा सकता, सिवाय इसके कि यह पुराना पड़ सकता है । कोई भी नेता मुक्त रूप से अपनी टीम का नेतृत्व तभी कर सकता है जब उसे यह सही-सही पता हो कि उसके चारों ओर क्या-क्या हो रहा है । सही ढंग से नेतृत्व करने के लिए शिक्षा से लगातार संबद्ध रहना जरूरी है । एक सफल टीम के नेता बनने के लिए जरूरी है कि शोरगुल तथा दिन भर की कामकाजी भीड़ भाड़ के बाद रूके और अगले दिन के लिए अपने को तैयार करें । हमें हमेशा याद रखना चाहिए कि हम सिर्फ सफलताओं से ही नहीं बनते हैं , हमारा निर्माण असफलताओं से भी होता है । जो लोग अपने पेशे से शीर्ष पर पहुंचना चाहते हैं , उनके भीतर पूर्ण वचनबद्धता का मूलभूत गुण होना जरूरी है । पूरी क्षमता के साथ काम करने की इच्छा के बाद मुश्किल से ही कोई इच्छा जन्म ले पाती है । मेरे साथ जो लोग थे उन्हें प्रति हफ्ते चालीस घंटे काम करने का पैसा मिलता था । मैं ऐसे लोगों को भी जानता हूँ जो हर हफ्ते 60-80 और यहाँ तक कि 100 घण्टे तक काम करते थे क्योंकि उन्हें अपना काम रोमांच पैदा करने वाला, चुनौती भरा एवं अच्छा प्रतिफल देने वाला लगता था । सभी सफल पुरूषों व महिलाओं में पूर्ण वचनबद्धता का गुण जरूर पाया जाता है । क्या आप कुछ देखने या करने से इनकार कर रहे हैं । क्योंकि वह आपको उस व्यवस्था से सामना करवाता है जिसमें आपका विश्वास है? क्या आप उन तनाव को झेल सकने में सक्षम हैं? जो आपके जीवन में पैदा हो रहे हैं । एक ऊर्जावान और किंकत्वर्यविमूह अथवा भ्रमित व्यक्ति के बीच का फर्क वस्तुतः उनके अनुभवों को व्यवहार में लाने के तरीकों में अंतर का है । आदमी के जीवन में मुश्किलें आनी जरूरी हैं क्योंकि वे न सिर्फ उसकी प्रगति अपितु उसके स्वास्थ्य के लिए जरूरी हैं।

- जब आप एक बार अपने कार्य के प्रति अपने को वचनबद्ध बना चुके हो और ऊर्जावान हो चुके हों तब आपको अच्छे स्वास्थ्य और अपार ऊर्जा की भी आवश्यकता होगी । शीर्ष पर पहुंचने के लिए दृढ़ इच्छा शक्ति जरूरी होती है । चाहे वह माउण्ट एवरेस्ट हो या आपके कार्य क्षेत्र का शीर्ष । हर व्यक्ति अलग-अलग ऊर्जा लेकर जन्मा है और जो सबसे पहले प्रयास करेगा और अपनी उर्जा का इस्तेमाल करेगा वही सबसे जल्दी अपने जीवन को सुव्यवस्थित कर पायेगा ।
- बड़ी वैज्ञानिक परियोजनाएं उन पहाड़ों के समान हैं जिस पर थोड़ी कोशिशों से जो सम्भव हो सके तथा बिना इच्छा के चढ़ा जाना चाहिए। तुम्हारी स्वयं की प्रकृति को ही वास्तविक गति का पता लगाना चाहिए अगर तुम अनवरत चल रहे हो गति और बढेगी, अगर तुम तनावग्रस्त और बहुत ही उत्तेजित हो धीरे हो जाआगे। तुम पहाड़ पर उस साम्य व्यवस्था में चढ़ो जिसमें न थकान हो न बैचेनी हो। चीनी की जिस मिठास का हम स्वाद लेते हैं वह न तो चीनी का गुण है और न ही हमारा। चीनी के साथ जो पारस्परिक क्रिया की प्रक्रिया है हम तो उसे अनुभव के रूप में प्राप्त कर रहे हैं । जहाँ तुम जा रहे हो उसके बारे में जानों । दुनिया में यह जानना इतना महत्वपूर्ण नहीं है कि हम कहाँ खड़े हैं बल्कि यह देखों कि हम किस दिशा में जा रहे हैं । जो आप हासिल करते हैं बात वह नहीं है आपको कभी भी पूरी तरह संतुष्ट नहीं हो जाना चाहिए और हमेशा अपने आपको श्रेष्ठ साबित करने के रास्ते तलाश करने चाहिए ।
- अच्छे और बुरे लोग सूरज के नीचे ठीक उसी तरह से रहते हैं जैसे किसी एक कपड़े में काले व सफेद धागे को साथ बुना जाता है लेकिन इनमें से जब या तो एक काला धागा टूट जाये तो फिर सफेद धागा जुलाहे को पूरे कपड़े को देखना होगा और साथ ही उसे करघा भी देखना पड़ेगा। व्यक्ति के माध्यम से ईश्वर ऐसी बड़ी-बड़ी चीजें कर लेता है। सच्चा कर्मयोगी यह परवाह नहीं करता कि काम का श्रेय कौन ले जाता है । अंहकार को छोड़ देना चाहिए ।
- कुल मिलाकर जीवन जो है वह अनसुलझी समस्याओं, संदिग्ध विजय, पराजय का ही मिश्रण है। समस्या यह है कि हम प्राय: जीवन के साथ जूझने के बजाय इसका विश्लेषण करने लगते हैं लोग अपनी असफलताओं से कुछ सीखने के बजाय या उनका अनुभव लेने के बजाय उसके कारणों एवं प्रभाव की चीरा-फाड़ी करने लगते हैं । मेरा यह मानना है कि कठिनाईयों एवं संकटों के माध्यमों से ईश्वर हमें बढ़ने का अवसर प्रदान करता है । इसलिए जब आपकी उम्मीदें, सपने एवं लक्ष्य चूर-चूर हो गये हों तो उनके भीतर तलाश कीजिए आपको उनके भीतर छिपा कोई सुनहरा मौका अवश्य मिलेगा ।
- मैने देखा है कि व्यक्ति अपने कार्य में उन अच्छाइयों और विशेषताओं को देखता है जो उसके महत्वों, लक्ष्यों से संबंधित होती हैं और जिन्हें वह अपने जीवन में महत्वपूर्ण मानकर चलता है। अगर किसी नौकरी में कर्मचारियों की उपलब्धि, पहचान, मान्यता, जिम्मेदारी, भविष्य की उन्नति जैसी जरूरते पूरी होती हैं तो वे अपना लक्ष्य हासिल करने के लिए कठोर परिश्रम करेंगे।
- भागीदारी अपने जीवन को पूर्ण रूपसे शामिल कर लेना और प्रतिबद्धता ये तीनों किसी कामकाज की मुख्य पूंजी हैं। वैज्ञानिक प्रयोगशालाओं और अकादमी संस्थाओं के संयुक्त प्रयासों से भारत निश्चित रूप से तकनीकी उपलब्धि हासिल कर सकता है । अगर कोई भारतीय उद्योग को कोई सिर्फ निर्माण करने वाली फैक्ट्रियों की रचना निर्मित छवि से मुक्त कर दे तो वे देश में विकसित तकनीकी को प्रयोग में लाकर अच्छे नतीजे हासिल कर सकती है । आज की दुनियाँ में टैक्नोलॉजी में पिछड़ापन परतंत्रता की ओर ले जाता है ।

- आज के नौजवान की जीवन शैली को स्वपराजय की ओर ले जाने वाले इन रास्तों से बचना चाहिए। भौतिकता अर्जित करने के लिए कार्य करने की संस्कृति और उससे मिलने वाले प्रतिफल को अपने जीवन से अलग कर देना चाहिए । भारतीय युवाओं को जिस सबसे बड़ी समस्या का सामना करना पड़ता है मेरा मानना है कि वह दृष्टि की स्पष्टता एवं निर्देशन की कमी है । किसी को भी चाहे गरीब हो या छोटा जीवन के बारे में हताशा महसूस नहीं करनी चाहिए । समस्याएं जीवन का हिस्सा है दु:ख भोग ही सफलता का तत्व है । जैसा किसी ने कहा है

  "ईश ने नहीं कहा कि दूंगा सदा स्वच्छ नीला आकाश।
  फूल भरी राहें जीवन भर, बिन बादल और बिन बरसात ।
  बिन दु:ख के आनन्द न होगा और न शांति बिना प्रलाप ।"

- मैं यह कहने की धृष्टता नहीं करूंगा कि मेरा जीवन किसी के लिए एक आदर्श या मॉडल के रूप में हो सकता है । लेकिन अंधकारमय जगह पर रहने वाले कुछ गरीब बच्चे, शोषित समाज में रह रहे बच्चे मेरे जीवन की बनी नियति से थोडा सा दिलासा जरूर ले सकते हैं, क्या यह उनके पिछड़ेपन या निराशाजनक माहौल से उबारने में मदद कर पायेगी। वे जहाँ हों उन्हें यह मालूम होना चाहिए कि ईश्वर उनके साथ है, और उनके साथ हैं तो कोई उनका क्या कर सकता है ?
- "ईश्वर ने दी सदा पुरूषों को शक्ति, जीवन के हर एक दिन, श्रांति हरेक श्रम के संग बाँधी, और रोशनी राहे चुन-चुन"।
- जीवन में आप अपने स्वयं के भीतरी संसाधनों के निवेश की इच्छा रखिये, खासकर स्वयं अपनी कल्पना की । यही आपको निश्चित रूप से सफलता दिखाएगी । जब आप स्वयं अपनी इच्छा एवं जिम्मेदारी से कोई काम अपने हाथों में लेते हैं तो आप एक इंसान बन जाएंगे । आप, मैं और प्रत्येक व्यक्ति को ईश्वर ने यहाँ अपनी-अपनी सृजनात्मक क्षमता से कुछ बनाने और स्वचेतना के साथ शांति से रहने के लिए भेजा है । हम अपने-अपने रास्ते अलग चुनते हैं और अपनी-अपनी नियति तय करते हैं । जीवन एक कठिनाइयों भरा खेल है। इसमें आप सिर्फ तभी जीत सकते हैं जब आप एक व्यक्ति होने का जन्मसिद्ध अधिकार हासिल कर लें । इसे प्राप्त करने के लिए आपको सामाजिक या बाहरी खतरे उठाने को तैयार रहना होगा ।